3. कॄ 10. A.: कारये (विज्ञाने v.) noscere. (Gr. *κρίνω*, lat. *cerno*, quae formâ cum कृणामि cl. 9. cohaerent, v. gr. comp. 109[a]). 5. 496.).

कॄत् 10. P. कीर्तयामि (ut mihi videtur, *Denom.* a कीर्ति gloria, quod ipsum a कॄ, quocum fortasse lat. *CEL* vocis *celeber* cohaeret, mutato *r* in *l*) 1) dicere, eloqui, enuntiare, memorare. MAN. 3. 36.: सर्वं शृणुत तम् विप्राः सम्यक् कीर्तयतो मम; 10. 123.: विप्रसेवै 'व शूद्रस्य विशिष्टङ्कर्म कीर्त्यते. 2) laudare, celebrare. N. 20. 36.: येच त्वाम् मनुष्या लोके कीर्तयिष्यन्त्य् अतन्द्रिताः; BH. 9. 14.: सततङ्कीर्तयन्तो माम्.

c. उत्, अनु, परि, प्र, सम् + प्र, सम् *id.* RAGH. 10. 33.: महिमानम् ... उत्कीर्त्य तव; R. Schl. I. 14. 22.: अवज्ञाय ... मानुषान् ना 'न्वकीर्तयत्; MAN. 2. 122.: स्वन् नाम परिकीर्तयेत्; M. 56. परिकीर्तित celebratus; MAN. 3. 27.: ब्राह्मो धर्मः प्रकीर्तितः; BH. 18. 4.: त्यागो हि ... त्रिविधः सम्प्रकीर्तितः; N. 5. 10.: सङ्कीर्त्यमानेषु राज्ञान् नामसु.

1. क्लृप् 1. A., *secundam grammaticos etiam* P. (ut videtur, a r. कृ adjecto प्, sicut saepe in formis caus. - gr. 519. sq. - mutato ऋ in लृ, vel, in formis gunatis, अर् in अल्; plerumque enim haec radix कल्प् sonat, unde Praes. कल्पामि, कल्पे, v. कृप्) fieri, *praesertim* participem fieri *alcjs rei, vel* causam fieri *alcjs rei*, esse *alicui rei*, converti *in alqd*, afferre *alqd, c. dat. rei, plerumque substantivorum abstractorum.* BH. 2. 15.: सो ऽमृतत्वाय कल्पते is immortalitatis particeps fit; RAGH. 18. 32.: अजन्मने ऽकल्पत liberationis a nativitate particeps factus est. - क्लृप्त factus, constitutus. MAN. 3. 69.: पञ्च क्लृप्ता महायज्ञाः. (Huc traxerim nostrum *helfe*, goth. *hilpa*, praet. et radix *halp*, quod accuratissime cum कल्प् convenit, mutatâ initiali tenui in aspiratam, ex generali lege, et servatâ tenui finali, sicut in *slêpa* dormio = स्वप्, v. gr. comp. 89.; lith. *gélbmi* juvo, v. क्लृप् cl. 10.)

c. उप *i. q. simpl.* MAN. 3. 202.: वार्य् अपि श्रद्धया दत्तम् अक्षयायो 'पकल्पते (Schol. अक्षयसुखहेतुः सम्पद्यते). - उपक्लृप्त factus, praeparatus, apportatus (v. क्लृप् cl. 10. praef. उप). MAN. 3. 208.: आसनेषू 'पक्लृप्तेषु ... विप्रांस् तान् उपवेशयेत् (Schol. उपक्लृप्तेषु explicat per विन्यस्तेषु i. e. collocatis); 8. 333.: यस् त्व् एतान्य् उपक्लृप्तानि द्रव्याणि स्तेनयेत् (Schol. उपभोगार्थम् कृतसंस्काराणि).

c. वि haesitare, dubitare. HIT. 53. 10.: आदिष्टो न विकल्पेत.

2. क्लृप् 10. P. कल्पयामि. 1) facere, efficere, creare. RAGH. 8. 46.: मम भाग्यविप्लवाद् अशनिः कल्पित एष वेधसा; R. Schl. I. 35. 1.: पौत्रीम् इष्टिम् अकल्पयत्; RAGH. 1. 94.: कल्पयामास वन्याम् एवा 'स्य संविधाम् (Schol. Calc. = सम्पादयामास). 2) dare, impertire. RAM. I. 53. 10.: भागान् न कल्पयथ मे सुराः; MAN. 11. 231.: कल्पयित्वा 'स्य वृत्तिम्; MAH. Ex. 58.: आसनङ्कल्पयामास.

c. उप praeparare, apportare. RAM. I. 11. 58.: यज्ञे यद् उपकल्पितम्; III. 65. 17.: शय्या त्वदर्थम् उपकल्पिता; N. 23. 11.: तस्य प्रक्षालनार्थाय कुम्भास् तत्रो 'प कल्पिताः.

c. परि 1) facere, parare. RAGH. 4. 6.: परिकल्पितसान्निध्या ... सरस्वती; 11. 23.: आससाद मुनिर् आत्मनस् ततः शिष्यवर्गपरिकल्पितार्हणम् ... तपोवनम्; MAN. 9. 152.: सर्वम् वा रिक्थजातन् तु दशधा परिकल्प्यच (Schol. दशधा कृत्वा). 2) constituere, definire. UP. 35.: तस्या 'पि ... तया निशि सङ्केतकन् द्वितीयस्मिन् प्रहरे पर्यकल्प्यत.

c. प्र 1) facere. दण्डम् प्रकल्पितुम् punire, castigare. MAN. 8. 324. 2) dare, impertire. MAN. 11. 22.: वृत्तिन् धर्म्याम् प्रकल्पयेत्, *v. simpl. sgf.* 3.

c. सम् cogitare. BHAR. 3. 63.: अतीतम् अपि न स्मरन् अपिच भाव्यसङ्कल्पयन्. (Schol. भवितव्यन् न सङ्कल्पयन्.)

केका *f.* pavonum clamor. RAGH. 1. 39.

केकिन् *m.* (a praec. s. इन्) pavo. AM.

केत् 10. P. advocare, invitare; consilium dare (*proprie* facere ut aliquis sciat, Caus. radicis कित् scire).

केत *m.* (r. कित् s. अ) 1) domus, habitatio. 2) *in dial.*